शास्त्रीय नृत्य

PART-2

कुचिपुड़ी

→ आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के एक गाँव कुचेलापुरम के नाम पर रखा।

↳ यह भाषण (माइम) और शुद्ध नृत्य को जोड़ता है।
(It is question of speech (Meam) and pure dance)

↳ भागवत, पुराण को आधार माना जाता है।
(Bhagwat, Purans is considered as the basis).

↳ पीतल की तश्तरी में पैर रखकर नृत्य करने का प्रचलन है। इसे तरंगम कहते हैं, पैरों की मुद्राएँ सम-पाद मंडिकोप्पु कन्तेरा, नागबंध।
(There is a tradition of dancing by keeping feet on the brass plate. This is called Tarangam. the postures of the feet are Sam-pad Mandikoppu Kantera, Nagbandha).

↳ इसमें कर्नाटक संगीत पेश होता है।
(It features Karnataka Music)

↳ वाक्, मूकाभिनय और शुद्ध नृत्य के संयोजन वाला नृत्य कुचिपुड़ी है।
(Kuchipudi is a dance that combines speech, mime and pure dance).

↳ कुचिपुड़ी का आदि गुरुः सिद्धेंद्र योगी — इन्होंने भामाकलपम नाटक की रचना की जो कुचिपुड़ी पर आधारित है।

↳ नर्तकों को भगवतालु के नाम से जाना जाता है।
(The dancers are known as Bhagavatalu).

↳ सोल्लाकद या पताक्षर → इस नृत्य भाग में शरीर की हरकतें शामिल
(Sollakad or Patakshar — This dance part involves body movements)

↳ कावुत्वम – इसमें व्यापक कलाबाजियाँ सम्मिलित होती हैं।
(Kaavutvam - Involves elaborate acrobatics /aerobatics).

↳ मंडूक शब्दम: एक मेढ़क की कहानी को कहते हैं।
(Manduk Shabdam: Tells the story of a frog)

↳ जल; चित्र नृत्यम – इसमें कलाकार अपने पैर के अँगूठे से सतह पर चित्र बनाते हैं।
(Jal Chitra Nrityam – In this the artist makes pictures on the surface with his toes).

↳ पुरुष कलाकारों की पोशाक को बगलबंदी कहा जाता है।
(The costumes of male Artists is called Bagalbandhi).

कथक

↳ अन्य नाम–: नखरी, कथाकारों का नृत्य

↳ यह राधा कृष्ण की कथाओं पर आधारित है।
(It is based on the identity of Radha Krishna).

↳ घुंघरू और चक्कर इस नृत्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं। (Ghungroo and chakkar are the main features of this dance).

↳ एक कहानी सुनाने के लिए इस नृत्य का प्रयोग होता है। इसे पढ़ंत कहा जाता है।
(This dance is used to tell a story. This is called Reading)

↳ कथक नृत्य की वेशभूषा अनारकली या लंबी चूड़ीदार के साथ होती है
(Kathak dance costumes are Anarkali or long shirt with churidar).

↳ यह नृत्य लखनऊ घराना, जयपुर घराना, बनारस, घराना (सबसे पुराना) और रायगढ़ घराना शैली में किया जाता है।

↳ कथक की शास्त्रीय शैली को 20वीं शताब्दी में लीला सोखे के द्वारा पुनर्जीवित किया गया।

(The classical style of Kathak was received in the 20th century by Ledi Leela Sokhe).

↳ इसके प्रमुख विषय वैष्णववाद से जुड़े हैं।
(Its main themes are related to Vishnavism).

↳ इनका वर्तमान स्वरूप मुगरा परम्परा पर आधारित
(Its correct form is based on the Mughal Tradition).

कथकली

↳ पुरुषों द्वारा / by male

↳ रामायण ; महाभारत इसके आधार हैं।
Ramayana, Mahabharata is its foundation stone)

↳ नायक : पाचा
(Hero)

↳ खलनायक : कथी
(Villain)

↳ इसमें चेहरे का हाव-भाव का प्रदर्शन किया जाता हैं।
(It has facial Expression)

↳ नाट्य स्थान (थियेटर) कुट्टमपालम कहलाता हैं।
(Dance place (Theater) is called kuttampalam).

↳ इसकी शुरुआत केलीकोट्टु नामक ढोल बजाने से होती है एवं केरल के सोपना संगीत का प्रयोग होता हैं।
(It begins with the playing of a drum called KeliKottu and the Sopana music of Kerala is used).

↳ 24 मुख मुद्राएँ होती हैं।
(There are 24 main postures in this dance)

↳ इसमें 3 संगीत वाद्ययंत्र — इडक्का, चिंदा और मद्दलम का प्रयोग होता हैं।

↳ कथकली आकाश तत्व का प्रतीक हैं।

(Kathakali symbolizes the sky element).

↳ कथकली गीतों के लिए प्रयुक्त भाषा मणिप्रवलम अर्थात् मलयालम और संस्कृत का मिश्रण।
(The Lang. used for Kathakali songs is Manipravlam i.e. a Mixture of Malyalam and Sanskrit)

↳ गीतो के शब्दो को अट्टकथा कहा जाता है।
(The words of the songs are called Attakatha)

↳ कला सम और नलचरितम कथकली नृत्य के प्रकार हैं।
(Kala Sama and Nal charitam are types of Kathakali dance)

↳ यह ललित कला के 5 रूपों का एक सामंजस्यपूर्ण संयोजन है-
लिटरेचर (साहित्यम)
म्यूजिक (संगीतम)
पेंटिंग (चित्रम)
एक्टिंग (नाट्यम)
नृत्य (नृतम)

↳ अलग-2 पात्रों के लिए चेहरे के सुपरिष्कृत श्रृंगार के साथ सिर की टोपी का प्रयोग किया जाता है। श्रृंगार या वेशम 5 प्रकार का होता है- पाचा, काठी, थड़ी, कारी और मिनुक्कू अलग-2 रंगो के श्रृंगार में अपना महत्त्व होता है। (Headgear is used for diff. characters along with elaborate facial makeup. There are five types of Vesham - Pacha, Kathi, Thadi, Kari and Minukka. Diff. colours of Adornment have their own importance).

↳ हरा रंग कुलीनता, देवत्व और सद्गुण इंगित करता है।
(Green colour indicates Nobility, divinity and virtue).

↳ नाक की बगल में लाल धब्बे राजसी गौरव इंगित करता है?
(The red spot next to the Nose indicates royal pride).

↳ बुराई और दुष्टता इंगित करने के लिए काले रंग का उपयोग किया जाता है।
(Black colour is used to indicate evil and wickedness)

↳ पीला रंग संतो और महिलाओं के लिए होता है।
(Yellow color is for saints and women)

↳ पूरी तरह लाल रंग से पुता चेहरा बुराई इंगित करता है।
(A face painted entirely red indicates evil).

↳ सफेद दाढ़ी उच्चतर चेतना और देवत्ववाले प्राणियों को इंगित करती है।
(White bearded indicates beings with higher consciousness and divinity).

मोहिनीअट्टम

मोहिनी → सुंदर स्त्री
अट्टम → नृत्य

↳ एकल महिला द्वारा
(by single women)

↳ बालों में चमेली के सफेद फूल लगाये जाते हैं।
(White flowers of Jasmine are applied in the hair).

↳ इस नृत्य में केरल कसावु साड़ी पहनी जाती है।
(Kerala kasava saree is worn in this dance).

↳ इस नृत्य का उल्लेख व्यवहारमाला नामक प्राचीन ग्रंथ में किया गया है।
(This dance has been mentioned in an ancient text named Vyavahamala).

↳ विष्णु के स्त्रैण रूप की कहानी शामिल है।
(Contains the story of the feminine form of Vishnu).

↳ इसे जादूगरनी का नृत्य भी कहा जाता है।
(It is also called the dance of witch).

↳ इसमें भी मणिप्रवलम भाषा का प्रयोग
(Manipravalam lang. is also used in this).

↳ तेविटिच्चियाट्टम, नंगई नाटकम और दासियम इस नृत्य के रूप हैं।
(Thevitchityam, Nangai Natakam and Daashiyam are the form of this dance).

सत्त्रिया

↳ इसको वर्ष 2000 में शामिल किया गया।
(It has been included in the year 2000)

↳ इसकी खोज लगभग 500 वर्ष पूर्व हुई।

↳ संस्थापक/Founder श्रीमंत शंकर देव

↳ असम के वैष्णव मठों में विकासित नृत्य
(Dances developed in the Vaishnav monasteries of Assam)

↳ सत्रिया को अंकियानाट के प्रदर्शन के लिए लाया गया।
(Satriya was brought in to perform Ankiyaanat).

↳ जब इस नृत्य को पुरुष करता है, तो भांगी और जब स्त्री करती है, तो सीमंगी कहलाता है, त्योहारों पर यह नृत्य भोकोट (पुरुष भिक्षुओं) द्वारा किया जाता है।

↳ इसमे बोरगीत संगीत का प्रयोग होता है।
(Borgeet music is used in this)

↳ नृत्य का भाओना भाग → भगवान कृष्ण की कहानियों पर आधारि

↳ माटी अखोरा रूप का संबंध सात्रिया नृत्य से है। इसका अर्थ मिट्टी पर व्यायाम करना है।
(The Mati Akhora form is related on the sattriya dance. It means exercising on the soil).